an>

Title: Need for a special strategy for development of horticulture and forestry in the Himalayan region.

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक (हरिद्वार): माननीय अध्यक्षा जी, उत्तराखंड और हिमालय के क्षेत्र में बागवानी, वानिकी और संजीवनी जड़ी-बूटियों की असीम संभावनायें हैं। जैसा कि सभी को मालूम है, लेकिन संसाधनों के अभाव में और उचित, उन्नत तौर-तरीकों के अभाव में, प्रौद्योगिकी की कमी के कारण अपेक्षित इस बागवानी और जड़ी-बूटी के उत्पादन को अभी तक कोई प्रोत्साहन नहीं मिल सका है। यदि अमेरिका और यूरोपीय देशों की तुलना की जाए तो हमारा प्रति हेक्टेयर उत्पादन बहुत कम है। इसलिए मैं विशेषकर अनुरोध करना चाहूंगा कि जो हिमालय क्षेत्र की तमाम बेल्ट हैं, जिसमें आर्गेनिक खेती और सब्जी और फलों का उत्पादन असीमित सीमा तक हो सकता है, उसको एक विशेष योजना के तहत बढ़ावा दिया जाए, ताकि वहां की बेरोजगारी दूर हो सके। मैं यह कहना चाहूंगा कि उन्नत किस्म के फलों के वितरण, उत्पादन क्षेत्र का विस्तार, नर्सरी की स्थापना, विभिन्न पहलुओं पर कृषकों के प्रशिक्षण और विपणन देने के हेतु सहायता, संगठित बाजार हेतु उपयुक्त प्रणाली का विकास और निर्यात क्षमता का विकास और अनुसंधान व विकास को बढ़ावा देने के साथ-साथ भण्डारण और प्रसंस्करण की नई प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराना बहुत जरूरी है। इससे पूरे राष्ट्र का भी विकास होगा और जो पलायन की एक बहुत बड़ी समस्या है, उसका भी समाधान होगा।

मैं विनम्र निवेदन करना चाहता हूं कि इस क्षेत्र में 65 से लेकर 70 प्रतिशत वन क्षेत्र है, इसलिए उन वनों के संरक्षण और संवर्धन के साथ ग्रीन बोनस जोड़कर वहां के लोगों के साथ वनों को जोड़ा जाए। उद्यानिकी और वानिकी का हरिद्वार में एक अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र स्थापित किया जाए। जैव विविधता है, इसलिए आर्गेनिक खेती का बड़ा केन्द्र स्थापित करके वहां के लोगों को उससे जोड़कर वहां की आर्थिकी को और सुदृढ़ किया जाए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष :

श्री भैरों प्रसाद मिश्र,

कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल,

श्री चन्दू प्रकाश जोशी,

श्री रोड़मल नागर और

श्री सुधीर गुप्ता को डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।